Nav Jyoti, Vol. 6, No. 12, January-June 2018 ISSN : 2249-7331

सेवा केन्द्रों का कार्यात्मक वर्गीकरण

डॉ0 खेदू राम यादव

प्रवक्ता–भूगोल, जवाहर लाल नेहरू स्मारक पी0जी0 कालेज महराजगंज

भौगोलिक दृष्टिकोण से सेवा केन्द्र ऐसे केन्द्र है, जो अपने चतुर्दिक स्थित मानव अधिवासों को अनेक प्रकार की सेवाएं प्रदान करते हैं। अध्ययन क्षेत्र में ग्रामीण सेवा केन्द्र, केन्द्र स्थलों के ग्रामीण प्रतिरूप हैं, जो अपने निकटवर्ती स्थित मानव अधिवासों की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। जिस तरह केन्द्र स्थल का आर्थिक क्षेत्र में केन्द्रीय स्थान होता है, उसी तरह ग्रामीण सेवा केन्द्र भी ग्रामीण अधिवासों के वितरण प्रतिरूप में केन्द्रीय स्थान वाले होते है। इस तरह देखा जाय तो ग्रामीण सेवा केन्द्र, केन्द्र स्थल विकास प्रक्रिया में निचले क्रम के केन्द्र है, जिनकी प्रकृति ग्रामीण है और भविष्य में नगरीय केन्द्र के रूप में बन सकते हैं, यह स्पष्ट है कि सेवा केन्द्र प्राथमिक रूप में विभिन्न प्रकार की सेवाओं के केन्द्र होते हैं यदि भारत के ग्रामीण क्षेत्रों का सर्वेक्षण किया जाय तो यह स्पष्ट होता है कि जैस–जैसे ग्रामीण क्षेत्रों में प्रथम, द्वितीय क्रम के परिवहन मार्गों के साथ–साथ निचले क्रम में परिवहन जाल का विकास हो रहा है। उसी तरह ग्रामीण क्षेत्रों में नोडल (Nodal) केन्द्रों का जन्म हो रहा है, ये नोडल केन्द्र पहले स्थानीय आवश्यकता के अनुसार सेवाओं को प्रदान करते हैं, लेकिन ये धीरे–धीरे ये क्षेत्रीय वितरण प्रक्रियाओं के अंग होते जाते हैं। जो सेवा कार्यों के अतिरिक्त ऐसे केन्द्र, वाणिज्यिक केन्द्र, निर्माण, उद्योग, पारिवारिक उद्योग आदि के भी केन्द्र बनते जाते हैं। किसी क्षेत्र के सन्दर्भ में विभिन्न मानव अधिवासों के साथ इनका अलग–अलग प्रभाव क्षेत्र विकसित हो जाता है और पदानुक्रमिक रूप में बड़े केन्द्रों के प्रभाव क्षेत्र विकसित हो जाता है और पदानुक्रमिक रूप में बड़े केन्द्रों का प्रभाव क्षेत्र में छोटे केन्द्रों का प्रभाव क्षेत्र समन्वित हो जाता है। इस तरह ग्रामीण क्षेत्रों में ऐसे सेवा केन्द्रों के कार्यात्मक वर्गीकरण के आधार पर उनकी कार्यात्मक विशेषता का ज्ञान हो जाता है। कालान्तर में क्षेत्रीय लघु स्तरीय नियोजन हेतु ऐसे सेवा केन्द्रों की सहायता ली जाती है, क्योंकि इन्हीं केन्द्रों के माध्यम से सम्पूर्ण क्षेत्र में सामाजिक, आर्थिक कार्यों की भौगोलिक स्थिति निर्धारित की जा सकती है।

सेवा केन्द्रों का तात्पर्य केवल वहाँ सेवाओं का होना ही नही है, बल्कि सेवाओं के साथ बहुत से सामाजिक, आर्थिक क्रिया कलाप भी वहाँ विकसित हो जाते है। इसीलिए कार्यात्मक वर्गीकरण की प्रक्रिया में विभिन्न प्रकार के कार्यों की केन्द्रीयता और विशेषीकरण की प्रवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करके इन केन्द्रों का कार्यात्मक वर्गीकरण किया जाता है। प्रादेशिक नियोजन प्रक्रिया में ऐसे केन्द्र किसी नियोजन प्रदेश के केन्द्र नही होते, लेकिन प्रादेशिक प्रक्रिया में ऐसे केन्द्र किसी नियोजन प्रदेश के केन्द्र नही होते, लेकिन प्रादेशिक पदानुक्रम तंत्र में ऐसे केन्द्र किसी नियोजन प्रदेश के केन्द्र नही होते, लेकिन प्रादेशिक पदानुक्रम तत्रं में ऐसे केन्द्र न्यूनतम ग्रामीण इकाई से प्रत्यक्ष तौर से जुड़े रहते हैं। प्रायः इनमें से बहुत से केन्द्र विशिष्ट परम्पराओं और विरासत वाले धार्मिक, सामुदायिक अथवा व्यापारिक केन्द्र के रूप में भी पाये जाते है। इसीलिए नियोजन प्रक्रिया के अर्न्तगत सेवा केन्द्रों की सम्पूर्ण विशेषताओं का समावेश करके उनका एक उपर्युक्त कार्यात्मक वर्गीकरण किया जा सकता है।

प्रस्तुत अध्ययन में सेवा केन्द्रों के कार्यात्मक वर्गीकरण से पूर्व केन्द्र स्थलों और नगरों के कार्यत्मक वर्गीकरण की भौगोलिक समीक्षा करना आवश्यक है, क्योंकि इन्हीं को आधार को आधार स्परूप लेकर सेवा केन्द्रों का भी उपर्युक्त वर्गीकरण प्रस्तावित किया जा सकता है। यथार्थ में सेवा कार्यों के सन्दर्भ में बहुत से ग्रामीण केन्द्र भी केन्द्र स्थल की परिभाषा में आ जाते हैं। इसीलिए सभी केन्द्र स्थल नगरीय केन्द्र नहीं होते। इसतरह ग्रामीण सेवा केन्द्र स्थलीय पदानुक्रमिक तंत्र में ये लघुत्तम ग्रामीण केन्द्र के रूप में परिभाषित किये जा सकते हैं।

भौगोलिक साहित्य में अधिकतर केवल नगरीय केन्द्रों के कार्यात्मक वर्गीकरण कुछ विद्वानों ने किये हैं, लेकिन उनके वर्गीकरण का आधार नगरीय वर्गीकरण हो रहा है। नगर ऐसे केन्द्र स्थल हैं, जो अपने कुछ कार्यों द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों से अलग अस्तित्व बनाये रखते हैं। इस तरह नगरों द्वारा सम्पादित होने वाले दो कार्य महत्वपूर्ण है। इनका प्रथम कार्य अपने चतुर्दिक क्षेत्रों की सेवाएं प्रदान करना और उसके बदले में धन अर्जित करना ही जबकि गौण कार्यों में ऐसे कार्य सम्मिलित किये जाते है। जो नगरीय सीमा के अन्तर्गत सम्पादित होते हैं।

इस तरह नगरों का वर्गीकरण उनके कार्यों के आधार पर करके नगरों के क्षेत्रीय महत्व का आंकलन किया जाता है। उसी तरह केन्द्रस्थलों अथवा सेवा केन्द्रों का वर्गीकरण उनके कार्यों के आधार पर करके किसी भी क्षेत्र के सन्दर्भ में उनके सापेक्षिक महत्व को निर्धारित किया जाता है और लघु स्तरीय नियोजन प्रक्रिया में इसी कार्यात्मक वर्गीकरण का उपयोग करके सामाजिक आर्थिक कार्यों को पुर्नगठित किया जा सकता है।

इस सन्दर्भ में सेवा केन्द्रों के कार्यात्मक वर्गीकरण से पूर्व अब तक प्रचलित नगरों के कार्यात्मक वर्गीकरण हेतु इससे एक आधार मिल सकता है। परम्परागत रूप में नगरों को उनके प्रमुख कार्यों के आधार पर विभाजित किया जा रहा है, जैसे धार्मिक नगर, बन्दरगाह, बाजार केन्द्र, व्यापारिक केन्द्र आदि। नगरों के कार्यात्मक वर्गीकरण का प्रयास अर्थशास्त्रियों, नगर नियोंजको, भूगोलवेत्ताओं आदि द्वारा किये जाते रहे हैं, 19वीं शताब्दी से नगरों के वर्गीकरण होते रहे हैं। तब से लेकर अबतक विभिन्न विद्वानों ने अनेको विधियों का प्रयोग करके नगरों का वर्गीकरण किया है। इनसारी विधियों को दो वर्गों में रखा जा सकता है।

1. अनुभावात्मक विधियाँ –

भूगोलवेत्ताओं ने इस विधि का प्रयोग 1921 ई0 में अरूसों द्वारा किये गये वर्गीकरण से प्रारम्भ किया। अरूसो ने नगरों को सर्वप्रथम सक्रिय और निष्क्रिय दो वर्गों में बाटँकर पुनः इन्हें प्रशासन, सुरक्षा, संस्कृति उत्पादन संचार तथा मनोरंजन में विभाजित किया। इसीतरह बेमर और ह्वाइट ने नगरों को औद्योगिक राजनैतिक व्यापारिक स्वास्थ्य मनोरंजन एवं शिक्षा केन्द्रों में विभाजित किया। कालान्तर में जेम्स ने भारतीय नगरों को राजधानी नगर, धार्मिक नगर, विनिर्माण नगर, सैनिक छावनी, अर्न्तप्रादेशीय, समुद्र पत्तन आदि में वर्गीकरण किया। भारतीय नगरों के ही सन्दर्भ में 1954 ई0 में वी0 नाथ ने अपना वर्गीकरण प्रस्तुत किया। इसी प्रकार अन्य बहुत से विद्वानों ने जैसे टैवार्था, हाल आदि ने अनुभावात्मक विधियों का प्रयोग करके नगरों का वर्गीकरण करने का प्रयास किया है।

उल्लेखनीय है कि अनुभावात्मक विधि प्रायः व्यक्तिगत विवेक और नगरों के प्रत्यक्ष अवलोकन पर आधारित रहती है। इसीलिए शुद्धतम रूप में इसका उपयोग वैज्ञानिक निष्कर्ष नही प्रदान कर पाता है।

2. मात्रात्मक विधियाँ –

इस विधि के अन्तर्गत सांख्यिकीयआकड़ों का प्रयोग करके गणितीय विधियों को अपनाकर नगरों का कार्यत्मक वर्गीकरण प्रस्तुत किया जाता है। इसमें विभिन्न व्यवसायों के अन्तर्गत संलग्न जनसंख्या के आधार पर नगरों का कार्यात्मक विभाजन प्रस्तुत किया जात है। इस तरह की गणितीय विधियों का प्रयोग सर्वप्रथम पाश्चात्य विद्वानों ने प्रारम्भ किया। इस सन्दर्भ में उल्लेखनीय प्रयास सी0 डी0 हैरिश द्वारा अमेरिकी नगरों के वर्गीकरणसे प्रारम्भ हुआ। इन्होंने अमेरिकी नगरों को 8 वर्गों विनिर्माण, थोक व्यापार, फुटकर व्यापार, परिवहन, खनन, शिक्षा, स्वास्थ्य और मनोरंजन तथा विभिन्न कृत वर्गों में विभाजित किया। हैरिश के बाद बहुत से समाज शास्त्रियों और भूगोलवेत्ताओं ने नगरों के व्यवसायिक आकड़ों को ध्यान में रखकर उनका वर्गीकरण प्रस्तुत किया है। कुछ विद्वानों जैसे निडलर, विल्सन, जौन्स आदि ने हैरिश के विधि में सशोधन करके नगरों का वर्गीकरण किया। इसमें नेल्सन की विधि अधिक उल्लेखनीय मानी जाती है। इन्होंने पावनाल द्वारा प्रस्तुत विधि के आधार पर नयी विधि का

विकास किया। नगरों द्वारा सम्पन्न किये जाने वाले प्रत्येक कार्य हेतु उन्होंने माध्य और प्रमाणिक विचलन निकालकर नगरों का कई वर्ग बनाया। इस आधार पर उन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका के नगरों का अध्ययन करके, व्यक्तिगत सेवा, लोक प्रशासन, थोक व्यापार, वित्त बीमा, खनन तथा विभिन्न कृत वर्गों में बाँटा। इस विधि पर आधारित होकर कालानतर में अलेकजेण्डर, डिंक आदि ने नगरों का कार्यात्मक वर्गीकरण प्रस्तुत किया। बाद में कई विद्वानों ने नगरों के आर्थिक आधारों को लेकर भी इनका कार्यात्मक वर्गीकरण प्रस्तुत किया। इनमें उलमैन, महामाया मुखर्जी उल्लेखनीय हैं। कालान्तर में वेब ने दो सूचकांको कार्यिक और विशेषीकरण को आधार मानकर संयुक्त राज्य अमेरिका के नगरों को 7 वर्गों में विभाजित किया। स्मिथ और बेरी ने बहुचरीय विश्लेषण के आधार पर नगरों का कार्यात्मक वर्गीकरण प्रस्तुत किया है। इसी तरह न्यूनतम विचलन विधि द्वारा भी वीवर, दोई और रफी उल्लाह ने नगरों का कार्यात्मक वर्गीकरण प्रस्तुत किया है।

इस प्रकार विभिन्न विद्वानों द्वारा सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग करके किये गये कार्यात्मक वर्गीकरण की समीक्षा करते हुए यह स्पष्ट होता है कि विभिन्न विधियों से नगरों का कार्यात्मक वर्गीकरण नगरों द्वारा किये जाने वाले कार्यों को आधार मानकर किया गया है। नगर वर्गीकरण का कार्यिक आधार एक उपयुक्त आधार है। लेकिन इसमें कठिनाई यह है कि नगर अपनी विकास प्रक्रिया में अपने प्रारम्भ से लेकर प्रौढ़ावस्था तक कई प्रकार के कार्यों को सम्पादित करते है। इसीलिए किसी एक नगर को कार्य विशेष का आधार अधिक उपयुक्त नही है। इसीलिए इस विधि में सापेक्षिक रूप में विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न कार्यों के सन्दर्भ में कार्यात्मक विशेषीकरण की तीव्रता का निर्धारण करके जो कार्यात्मक वर्गीकरण प्रस्तुत किया है, वह अधिक उपयुक्त हैं।

नगरों के कार्यात्मक वर्गीकरण में भारतीय भूगोल वेत्ताओं का योगदान –

पाश्चात्य विद्वानों द्वारा प्रस्तावित कार्यात्मक वर्गीकरण की अनेक विधियों का अनुसरण करते हुए भारतीय भूगोल वेत्ताओं ने भी नगरों के कार्यात्मक वर्गीकरण का अनेक प्रयास किया है। इनमें अनेक भूगोल वेत्ताओं ने पाश्चात्य विद्वानों द्वारा प्रस्तुत विधियों में भारतीय परिवेश के अनुसार आशिंक संशोधन करके नगरों का कार्यात्मक वर्गीकरण प्रस्तुत किया है। वैसे भारत के समाज शास्त्रीय परिवेश में नगर केन्द्रों को परम्परागत रूप में विशेष रूप में धार्मिक, व्यापारिक आदि वर्गों में विभिाजित किया जाता रहा है। भारतीय भूगोल वेत्ताओं में वी0 जानकी ने केरला के सन्दर्भ में, महामाया मुखर्जी ने अपने शोध कार्य में काशी नाथ सिंह ने उत्तर प्रदेश के सेवा केन्द्रों के सन्दर्भ में पाश्चात्य विद्वानों की विधियों को अपनाया। गांगुली ने नेल्सन की विधि के आधार पर भारतीय नगरों का कार्यात्मक वर्गीकरण प्रस्तुत किया। इसी तरह सक्सेना, बंसल, तिवारी, ओमप्रकाश सिंह, मिश्रा आदि ने विभिन्न विधियों को अपना कर भारतीय नगरों का वर्गीकरण किया है। ओमप्रकाश ने नेल्सन की विधि में सुधार करके अपनी एक द्विसूचकांक विधि का विकास किया है। जिसमें कार्यात्मक केन्द्रीयता और विशेषीकरण की तीव्रता को संयुक्त रूप से प्रयुक्त करके नगरों का कार्यात्मक वर्गीकरण किया जाता है। भारतीय जनगणना विभाग ने आर्थिक कार्यों के आधार पर भारतीय नगरों को पाँच वर्गों में वर्गीकृत किये हैं।

तालिका संख्या – 5.1

जनगणना विभाग द्वारा भारतीय नगरों का कार्यात्मक वर्गीकरण

क्रम0 सं0	आर्थिक कार्य क्षेत्र	वर्ग संख्या	कार्यात्मक वर्ग
1	कृषि एवं कृषिगत क्रियाकलाप	1,2,3,4	प्राथमिक क्रिया कलाप के नगर
2	उद्योग एवं निर्माण	5(अ) (ब)	औद्योगिक नगर
3	व्यापार एवं वाणिज्य	6,7	व्यापारिक नगर
4	यातायात, संग्रहण एवं संचार	8	यातायात नगर
5	विविध सेवाएं	9	विविध सेवा के नगर

सेवा कार्यों के सन्दर्भ में कार्यात्मक वर्गीकरण–

संकल्पनात्मक रूप में यह पहले स्पष्ट किया जा चुका है कि सेवा केन्द्र भी केन्द्र स्थल अथवा नगर केन्द्र के समान ही किसी भी क्षेत्र में केन्द्रीय अवस्थिति वाले मानव अधिवास हैं। नगरों और केन्द्र स्थलों की तरह से सेवा केन्द्रों द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं में गुणात्मक और मात्रात्मक अन्तर मिलता हैं। अर्थात नगर केन्द्र जिन कार्यों और सेवाओं को सम्पादित करते हैं, सेवा केन्द्र भी वैसे ही कार्यों को सम्पादित करते है। लेकिन नगरों की अपेक्षा सेवा केन्द्रों द्वारा किये जाने वाले कार्यों की संख्या और उनका मात्रात्मक और गुणात्मक स्वरूप सीमित होता है, जैसा विभिन्न भूगोलवेत्ताओं ने स्पष्ट मत व्यक्त किया है कि सेवा केन्द्र भी नगर है। केन्द्र स्थलीय पदानुक्रमिक तंत्र के लघुत्तम स्तर के अंग है। इसीलिए यह कहा जा सकता है कि नगर अपने जन्म के प्रारम्भ से सेवा केन्द्र अथवा केन्द्र स्थल के रूप में विकसित होकर अपने वर्तमान रूप को प्राप्त हुए। इसलिए नगरों में आकार बृद्धि के अनुसार कार्यों की विविधता और उनके द्वारा सेवित क्षेत्र का विस्तार मिलता है, जबकि सेवा केन्द्र सीमित आकार वाले केन्द्रीय अधिवास हैं।, जिनकी केन्द्रीयता कम होती है और उनके द्वारा किये गये कार्यों की संख्या और उनका प्रभाव क्षेत्र भी सीमित होता है। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में सेवा केन्द्रों की प्रकृति और उनके वितरण का अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में भी सेवा केन्द्र, केन्द्र स्थलीय पदानुक्रमिक व्यवस्थाके अंग है। क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों में जैसे–जैसे परिवहन मार्गों का विकास होता जा रहा है। ठीक उसी अनुसार के वितरण के सन्दर्भ में उपभोक्ताओं के लिए न्यूनतम दूरी के आधार पर सेवा केन्द्रों का विकास हो रहा है और ऐसे केन्द्र अपने आकार के अनुसार स्थानीय अधिवासों को कार्यिक सुविधा प्रदान कर रहे हैं, अर्थात जो केन्द्र जितना बड़े आकार वाला है, वह उतने ही अधिक कार्यों को सम्पादित करता है। पदानुक्रमिक रूप में उससे छोटे केन्द्र अपेक्षाकृत कम कार्यों को अथवा सभी कार्यों की सीमित मात्रा का सम्पादन करते है।

इससे स्पष्ट होता है कि ग्रामीण सेवा केन्द्र भी विविध कार्यों को सम्पन्न करते है। अन्तर केवल यही है कि नगरों या बड़े स्थलों की अपेक्षा सेवा केन्द्र सीमित कार्यों अथवा कार्यों की कम गुणात्मक और मात्रात्मक स्थिति का सम्पादन करते है।

इसीलिए यदि ऐसे ग्रामीण सेवा केन्द्रों के कार्यात्मक विभाजन का प्रयास किया जाय, तो यह स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है कि जिन विधियों का प्रयोग करके नगरों अथवा केन्द्र स्थलों का कार्यात्मक वर्गीकरण किया जा सकता है। हांलाकि यह सम्भव हो सकता है कि अध्ययन क्षेत्र की विशिष्टताओं के आधार पर विभिन्न पदानुक्रम वर्ग के सेवा केन्द्रों में कार्यात्मक विशेषीकरण बहुत अधिक स्पष्ट न हो, फिर भी बहुत से सेवा केन्द्रों के सन्दर्भ में कुछ कार्यों के विशिष्टता की तीब्रता अवश्य अधिक हो सकती है। जिनसे उनके पीछे प्रभावी कारकों का अनुमान लगाया जा सकता है। चूँकि ग्रामीण सेवा केन्द्र प्रत्यक्ष रूप में मानव अधिवासों से जुड़े रहते है। इसलिए कार्यिक विशिष्टता का अनुमान लग जाने के बाद नियोजन व्यवस्था में इस केन्द्रों की भूमिका को पहचाना जा सकता है। इसीलिए सेवाकेन्द्रों का कार्यात्मक वर्गीकरण आवश्यक है।

अध्ययन क्षेत्र के सन्दर्भ में सेवा केन्द्रों का कार्यात्मक वर्गीकरण –

अध्ययन क्षेत्र जनपद गाजीपुर पूर्वी उत्तर प्रदेश में स्थित है, जो वर्तमान समय में पूर्वी उत्तर में एक संक्रमण क्षेत्र के रूप में विकसित हुआ है। प्राचीन काल से ही अध्ययन क्षेत्र में आवागमन एवं व्यापार सम्पन्न किया जाता था। कालान्तर में ये क्षेत्र अन्य जनपद के मुख्यालयों एवं धर्म स्थलों आदि से जुड़कर विकसित होते गये। इस तरह मुस्लिम काल में प्रशासनिक केन्द्र और ब्रिटिशकाल में अनेक व्यापारिक केन्द्रों का विकास अध्ययन क्षेत्र में हो चुका था। सेवा केन्द्रों की इस ऐतिहासिक विकास प्रक्रिया के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में अनेक सेवा केन्द्र धार्मिक, व्यापारिक प्रशासनिक आदि कार्यों को सम्पन्न करते थे।

इसलिए परम्परागत रूप में यह सेवा केन्द्रों के विभाजन का एक आधार दिखाई देता है। स्वतंत्रता के बाद वाले वर्षों में बनारस, बलिया, आज़मगढ़ और गोरखपुर के बीच सड़क सम्पर्क हो जाने

के बाद अध्ययन क्षेत्र के सेवा केन्द्रों का विकास तेजी से हुआ है। जिसमें अध्ययन क्षेत्र के सड़क मार्गों पर दुल्लहपुर, सादात, जखनियाँ, गाजीपुर, मनिहारी, सैदपुर, देवकली, विरनों, मरदह, करण्डा, कासिमाबाद, वाराचवर, मुहम्मदाबाद, भवरकोल, जमानिया, रेवतीपुर, भदौरा आदि सेवा केन्द्रो का विकास हुआ है। जो विभिन्न कार्यों को सम्पन्न कर रहें है। लेकिन उसमें कार्यात्मक विशिष्टता का अभाव है। इसीलिए भौागोलिक रूप में अध्ययन क्षेत्र के सेवा केन्द्रों का कार्यात्मक वर्गीकरण करने के लिए नगरों के कार्यात्मक वर्गीकरण की विधियों को अपनाया जा सकता है। तद्नुसार विभिन्न पदानुक्रम वर्ग के सेवा केन्द्रों में कार्यात्मक केन्द्रीयता और कार्यात्मक विशेषीकरण की तीव्रता के आधार पर सेवा केन्द्रों को वर्गीकृत किया जा सकता है।

प्रस्तुत अध्ययन के सन्दर्भ में ओम प्रकाश सिंह द्वारा प्रस्तावित विधि, द्विसूचकांक विधि को अपनाकर सेवा केन्द्रो का कार्यात्मक वर्गीकरण प्रस्तुत किया गया है। इसके लिए क्षेत्र भ्रमण करके विभिन्न सेवा केन्द्रो के विभिन्न कार्यों में कार्यरत जनसंख्या की सूचना लेकर सापेक्षिक रूप से विभिन्न कार्यों में लगी हुई जनसंख्या का आंकलन किया गया है। तथा विभिन्न सेवा केन्द्रों की कुल जनसंख्या और उन केन्द्रों पर विभिन्न कार्यों में कार्यरत जनसंख्या को आधार मानकर द्विसूचकांको की गणना की गयी है।

1. कार्यात्मक केन्द्रीयता
2. कार्यात्मक विशेषीकरण

ओमप्रकाश सिंह द्वारा प्रयोग में लायी गयी उपर्युक्त द्विसूचकांक विधि इस अर्थ में महत्वपूर्ण है, कि इससे एक और केन्द्रों के सापेक्षिक पदानुक्रमिक महत्व का शान होता है, तो दूसरी और विभिन्न केन्द्रों में कार्यों की सापेक्षिक महत्ता का भी आंकलन हो जाता है।

यद्यपि यह द्विसूचकांक विधि नगरों और केन्द्र स्थलों के वर्गीकरण के प्रयोग में लायी गयी है। फिर भी ग्रामीण सेवा केन्द्रों में कार्यों की विविधता नगरों की तरह नही पायी जाती है। बल्कि कम या अधिक मात्रा में सीमित कार्य ही इन केन्द्रों द्वारा सम्पन्न किये जाते हैं और एक–दो कार्यों में विशेषीकरण कुछ केन्द्रों में मिलता भी है, लेकिन अधिकांशतः निचले पदानुक्रमिक स्तर के केन्द्र सभी कार्यों को थोड़ी–थोड़ी मात्रा में सम्पादित करते है। इसलिए इस विधि का प्रयोग करने से ग्रामीण सेवा केन्द्र सापेक्षिक रूप में विशेषीकृत किये जा सकते हैं। प्रायः न्यूनतम दूरी सिद्धान्त के आधार पर महत्वपूर्ण केन्द्रीय कार्य कुछ ही केन्द्रों द्वारा सम्पादित होते है। इसीलिए ऐसे सेवा केन्द्र द्विसूचकांक विधि द्वारा आसानी से विशेषीकृत किये जा सकते हैं। यद्यपि भारतीय नगरों अथवा केन्द्र स्थलों में प्रयुक्त प्रमाणिक कार्यों का वही प्रतिरूप ग्रामीण केन्द्र स्थलों में नही मिलता है। इसलिए अध्ययन क्षेत्रों में सेवा केन्द्रों में मिलने वाले विभिन्न कार्यों का विस्तृत सर्वेक्षण करके ऐसे कार्यों का चयन किया गया है जो कम या अधिक मात्रा में अधिकांश केन्द्रों द्वारा सम्पादित किये जाते है। ऐसे केन्द्रीय कार्य निम्नलिखित हैं।

1. गृह उद्योग 2. वाणिज्य एवं व्यापार 3. विनिर्माण
4. परिवहन 5. विविध सेवाएं

उपर्युक्त विधि का प्रयोग करने के लिए अध्ययन में सम्मिलित सभी.....सेवा केन्द्रों में प्रत्यक्ष सर्वेक्षण द्वारा विभिन्न कार्यों में लगी जनसंख्या का आकलन और प्रकाशित स्त्रोतों से केन्द्रों की कुन जनसंख्या का आधार लेकर उपर्युक्त सूचकांको का आंकलन किया गया है। दोनों सूचकांको की गणना कार्यात्मक केन्द्रीयता सूचकांक और कार्यात्मक विशेषीकरण सूचकांक है जो निम्न प्रकार है–

$$S_1 = \frac{P_t}{\Sigma P_t} X \ 100$$

$$FC_1 = \frac{CF}{\Sigma CF} X\ 100$$

$$F.S.I. = F.S.O.\ X\ MF$$

$$F.S.O. = \frac{F.C.I}{S.I}$$

$$MF = \frac{S}{N} X$$

जहाँ,

SI = जनसंख्या आकार सूचकांकं।

Pt = किसी केन्द्र विशेष की एक कार्य में जनसंख्या।

ΣPt = किसी केन्द्र विशेष की कुल जनसंख्या।

F.C.I = कार्यात्मक केन्द्रीयता सूचकांक ।

C.T = केन्द्र विशेष की कार्य विशेष में लगी जनसंख्या।

ΣCF = सम्पूर्ण केन्द्र में उसी कार्य में संलग्न जनसंख्या।

F.S.Q. = ार्यात्मक विशेषीकरण लब्धि।

F.S.I. = कार्यात्मक विशेषीकरण सूचकांक।

MF = कुल कार्यात्मक जनसंख्या के सन्दर्भ में संलग्न जनसंख्या प्रतिशत माध्य।

S = किसी केन्द्र विशेष पर कार्य विशेष में लगी जनसंख्या।

N = अध्ययन क्षेत्र के सेवा केन्द्रों की कुल कार्यरत जनसंख्या।

उपर्युक्त सूत्रों की सहायता से अध्ययन क्षेत्र के सेवा केन्द्रों का कार्यात्मक केन्द्रीयता सूचकांक (F.C.I.) ज्ञात करने के लिए केन्द्र विशेष में, कार्य विशेष में संलग्न जनसंख्या और अध्ययन क्षेत्र के सम्पूर्ण केन्द्रों में उसी कार्य में लगी सम्पूर्ण जनसंख्या के आधार पर गणना की गयी है और अन्त में विभिन्न कार्यों का कार्यात्मक केन्द्रीयता सूचकांक ज्ञात किया। इसकी सहायता से सभी सेवा केन्द्रों के पदानुक्रमिक स्तर ज्ञात किये गये है। जिनका प्रयोग करके दूसरे सूचकांक में कार्यात्मक विशेषीकरण लब्धि (F.S.Q.) और केन्द्र विशेष के कार्य विशेष में संलग्न जनसंख्या के प्रतिशत माध्य (MF) की गणना की गयी है। इससे प्राप्त कार्यात्मक विशेषीकरण सूचकांक का पुनः माध्य और प्रमाणिक विचलन ज्ञात करके कार्यात्मक विशेषीकरण के 6 वर्ग बनाये गये है जो निम्न प्रकार है।

1. माध्य $+SD_0$ से माध्य $+SD_1$ तक
2. माध्य $+SD_1$ से अधिक तथा माध्य $+SD_2$ तक
3. माध्य $+SD_2$ से माध्य $+ SD_3$ तक
4. माध्य $+SD_3$ से माध्य $+ SD_4$ तक
5. माध्य $+SD_4$ से माध्य $+ SD_5$ तक

6. माध्य + SD_5 से माध्य + SD_6 तक

विशेषीकरण के उपरोक्त स्तर को निम्नलिखित रूप में नामांकित किया गया है।

1. अविशिष्टीकृत
2. अल्पविशिष्टीकृत
3. साधारण विशिष्टीकरण
4. मध्यम विशिष्टीकरण
5. अधिक विशिष्टीकृत
6. अत्यधिक विशिष्टीकृत

इसी तरह सेवा केन्द्रों के कार्यात्मक वर्गीकरण के साथ ही पदानुक्रमिक व्यवस्था का तुलनात्मक अध्ययन करने हेतु लेखा चित्र की सहायता ली गयी है। जिनमें कार्यात्मक विशेषीकरण सूचकांक y अक्ष पर और कार्यात्मक केन्द्रीयता सूचकांक X अक्ष पर प्रदर्शित किया गया है। कार्यात्मक केन्द्रीयता सूचकांक के मूल्यों के आधार पर 5 पदानुक्रमिक स्तर बनाये गये है। जो निम्नलिखित है।

1. पदानुक्रम का प्रथम स्तर – 17.00 से अधिक FCI मान।
2. पदानुक्रम का द्वितीय स्तर – 7.99 से 16.99 FCI मान।
3. पदानुक्रम का तृतीय स्तर – 2.99 से 2.98 FCI मान।
4. पदानुक्रम का चतुर्थ स्तर – 2.00 से 2098 FCI मान।
5. पदानुक्रम का पंचम स्तर – 1.99 से कम FCI मान।

अध्ययन क्षेत्र में सेवा केन्द्रों के कार्यात्मक वर्गीकरण का आरेखीय विश्लेषण – अध्ययन क्षेत्र के अर्न्तगत चयनित 50 सेवा केन्द्रों का कार्यात्मक वर्गीकरण करके उनकी 5 श्रेणियाँ बनायी गयी हैं। कार्यात्मक वर्गीकरण के उद्देश्यसे कार्यात्मक केन्द्रीयता सूचकांक एवं कार्यात्मक विशेषीकरण सूचकांक के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण के लिए तीन रेखाचित्रों की रचना की गयी है। प्रत्येक लेखाचित्र में विभिन्न सेवा केन्द्रों के सापेक्षिक विशेषीकरण के महत्व का आकंलन करने का प्रयास किया गया है। लेखाचित्र 5. 1 में कार्यात्मक केन्द्रीयता सूचकांक उर्ध्वाधर प्रदर्शित किया गया है। इन दोनो मूल्यों के बीच समान मूल्य की कर्णवत रेखा है जो विशेषीकरण की प्रवृत्ति, कार्यात्मक विशिष्टीकरण लब्धि को प्रदर्शित करती है। यदि कोई केन्द्र इस रेखा पर अथवा इसके बिल्कुल निकट स्थित है, तो इसका अर्थ यह होता है कि उस केन्द्र विशेष की कार्यात्मक केन्द्रीयता और जनसंख्या आकार दोनों समान महत्व का है।, यदि कोई केन्द्र उस रेखा से विचलित होगा, वह उसी प्रवृत्ति को सूचित करेगा अर्थात रेखा से जितना अधिक कार्यात्मक केन्द्रीयता की और अथवा जनसंख्या आकार की और केन्द्रों का झुकाव होगा। उस वर्ग में उधर विशेषीकरण माना जायेगा। अध्ययन क्षेत्र में सभी 50 केन्द्रों के विभिन्न कार्यों के लिए निर्मित लेखा चित्रों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि गृह उद्योग, व्यापार विनिर्माण, परिवहन और अन्य सेवाओं में विभिन्न केन्द्रों का वितरण समान मूल्य की रेखा से दोनो और है। इससे स्पष्ट होता है कि कुछ सेवा केन्द्रों को छोड़कर किसी भी कार्य का कोई भी विशेषीकरण नही है।

चित्र संख्या 5.1 से स्पष्ट है कि गृह उद्योग में एक चौथाई केन्द्र ही समान मूल्य की रेखा से कार्यात्मक केन्द्रीयता की और झुके हए है। इसमें गाजीपुर, मुहम्मदाबाद, जमानिया, सैदपुर, सादात, दिलदार नगर, जखनिया, बहादूरगंज, रेवतीपुर, भदौराए जंगीपुरए देवकली, मनिहारी, विरनों,करण्डा, भावरकोल, वाराचावर,, मरदह, बद्दोपुर में कार्यात्मक केन्द्रीयता अधिक है। इन केन्द्रों में गृह उद्योग का विशेषीकरण दिखाई देता है, इनमें भी सर्वाधिक विशेषीकरण गाजीपुर, मुहम्मदाबाद, सैदपुर तथा जमानिया में है। उल्लेखनीय यह है कि इन केन्द्रों की औद्योगिक स्थिति मुस्लिम वाहुल्य क्षेत्रों में है, जहाँ हथकरघा

उपयोग बहुत पहले से ही केन्द्रीत रहा है। और वर्तमान समय में भी हथकरघा उद्योग इन्हीं सेवा केन्द्रों में अधिक विकसित है।

वाणिज्य के अन्तर्गत समान मूल्य की रेखा पर गाजीपुर, मुहम्मदाबाद, जमानिया, सैदपुर एवं जनपद के सभी विकास खण्ड मुख्यालयों पर स्थित है। लेकिन समान मूल्य की रेखा से थोड़ा सा सुझाव जखनिया, दिलदारनगर, पहाड़गंज, रेवतीपुर, भदौरा, जंगीपुर,, देवकली, मनिहारी खास, विरनों, करण्डा आदि केन्द्र कार्यातमक विशेषीकरण की और उन्मुख है। लेकिन इनमें अधिकांश जनसंख्या आकार और कार्यात्मक केन्द्रीयता के सन्दर्भ में समान महत्व के है। अर्थात इन केन्द्रों में वाणिज्य तथा जनसंख्या आकार दोनों की समान स्थिति है। इसका कारण यह है कि गोरखपुर से आज़मगढ़ जाने वाले मार्ग पर अधिकांश केन्द्र स्थित है। कुछ केन्द्र गाजीपुर से आज़मगढ़ एवं गाजीपुर बलिया मार्ग पर है। ये केन्द्र नोडल केन्द्र के रूप में विकसित होते रहे हैं। परिणाम स्वरूप यहाँ वाणिज्यिक कार्यों का केन्द्रीयकरण रहा है। इसके विपरीत जलालाबाद, जखनिया,सोहवल, ताजपुर, भुड़कुरा, भौड़िहार, दुल्लहपुर, जखनिया गोविन्द आदि में जनसंख्या आकार की महत्व पूर्ण स्थिति है। जबकि इनमें से कुछ केन्द्रों में जैसे जलालावाद, जखानिया, दुल्लहपुर भुड़कुरा में वाणिज्यिक कार्यों की अधिकता है।

इसीप्रकार विनिर्माण में गाजीपुर, मुहम्मदाबाद, जमानिया, सैदपुर, सादात, दिलदार नगर, जखनिया, बहादुरगंज, भदौरा, जंगीपुर मनिहारी आदि केन्द्र समान मूल्य की रेखा से दूर कार्यात्मक केन्द्रीयता की और उन्मुख है। इसके विपरीत अन्य सभी केन्द्र जैसे मिर्जापुर, सोहवल, भुडकूडा, औड़िहार, दुल्लहपुर हथियाराम आदि केन्द्र जनसंख्या आकार की और उन्मुख है, अर्थात इन केन्द्रों में कार्यात्मक विशेषीकरण नही है। परिवहन के अन्तर्गत लगभग दो तिहाई केन्द्र समान मूल्य की रेखा से दूर कार्यातमक केन्द्रीयता की और है। गाजीपुर, मुहम्मदाबाद, जमानिया, सैदपुर, सादात, दिलदारनगर, जखनिया, बहादूरगंज, रेवतीपुर, भदौरा, जंगीपुर, देवकली, मनिहारी, विरनों, भावरकोल, कासिमाबाद, वाराचवर, नवली, मिर्जापुर औड़िहार, दूल्लहपुर, सादात आदि में परिवहन की केन्द्रीयता अधिक है। जबकि शेरपुरकला, सोहवल, जलालाबाद, ताजपुर मलिकपुरा में जनसंख्या आकार का महत्व अधिक है। इससे स्पष्ट होता है कि जो केन्द्र मुख्य मार्गों पर स्थित है, वहाँ परिवहन सम्बन्धी कार्यों का केन्द्रीयकरण हुआ है और जो केन्द्र मुख्य मार्गों से सम्पर्क मार्गों पर अथवा पिछड़े क्षेत्रों में स्थित है। यहाँ जनसंख्या आकार के अनुसार परिवहन कार्यों का केन्द्रीकरण नही हुआ है। यही स्थिति अन्य सेवा सम्बन्धी कार्यों के सन्दर्भ में है। यहाँ भी दो तिहाई केन्द्रों में सेवाकेन्द्रों में सेवा सम्बन्धी कार्यों का विशेषीकरण है। इनमें उल्लेखनीय केन्द्र गाजीपुर, मुहम्मदाबाद, जमानिया, सैदुपर, सादात, दिलदार नगर, जखनिया, बहादूरगंज, रेवतीपुर, भदौरा, जंगीपुर, देवकली, मनिहारी, विरनों आदि उल्लेखनीय है इनके विपरीत सोहवल, जलालाबाद,औड़िहार, दूल्लहपुर आदि केन्द्र समान मूल्य की रेखा के आस–पास है।

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि परिवहन और अन्य सेवाओं में जनसंख्या आकार की तुलना में कार्यात्मक केन्द्रीयकता अधिक है, जबकि वाणिज्य विनिर्माण आदि में कार्यात्मक केन्द्रीयता और जनसंख्या आकार दोनो का महत्व है। गृहउद्योग में बड़े आकार वाले सेवा केन्द्रों में कार्यात्मक केन्द्रीयता अधिक है। और जनसंख्या आकार का महत्व छोटे सेवा केन्द्रों में अधिक है।

कार्यात्मक अनुपात को और भी अधिक स्पष्ट रूप से विश्लेषित करने के लिए माध्य और कार्यात्मक विशिष्टीकरण सूचकांक (FSI) के साथ मानक विचलन का प्रयोग किया गया है। विभिन्न कार्यों केसन्दर्भ में माध्य और मानक विचलन का प्रयोग करके सभी सेवा केन्द्रों के कार्यात्मक विशेषीकरण को और भी अधिक स्पष्ट किया गया है। तालिका संख्या 5.2 से स्पष्ट है कि सर्वाधिक विशिष्टीकरण माध्य +SD5 से अधिक गृह उद्योग में दर्शनीय है, जबकि विनिर्माण, परिवहन और अन्यसेवाओं में विशिष्टीकरण माध्य +SD5 तक है। वाणिज्य में केवल माध्य +SD4 तक विशीष्टीकरण है।

तालिका संख्या–5.2

विशिष्टीकरण सूचकांक का माध्य एवं मानक विचलन

	गृह उद्योग	वाणिज्य	विनिर्माण	परि0	अ0स0
माध्य	.88	1.76	.44	.89	1.30
मानक विचलन	2.49	2.72	.20	1.49	2.11
माध्य +SD1	3.37	4.48	.64	2.38	3.41
माध्य +SD2	5.86	7.20	.84	3.87	5.52
माध्य +SD3	8.35	9.92	1.04	5.36	7.63
माध्य +SD4	10.84	12.64	1.24	6.85	9.74
माध्य +SD5	13.3	.	1.44	8.34	11.85
माध्य +SD1 **से अधिक**	15.82	.	.	.	.

तालिका संख्या 5.2 से स्पष्ट है कि गृहउद्योागें में सर्वाधिक विशेषीकरण मिलता है। इनमें माध्य +SD5 से अधिक गाजीपुर में माध्य +SD4 मुहम्मदाबाद में, SD3 में जमानिया और माध्य +SD2 में सैदपुर, सादात है शेष 45 केन्द्र माध्य +SD1 में है अर्थात इन सभी सेवा केन्द्रों में गृह उद्योग का विशेषीकरण अतिनिम्न या इससे भी कम है। प्रायः इन सभी केन्द्रों में माध्य के आस पास ही विशेषीकरण मिलता है, जबकि वाणिज्य के अन्तर्गत माध्य +SD4 में भावरकोल, माध्य +SD3 में जमानिया, मुहम्मदाबाद, दिलदारनगर, बहादूरगंज, जंगीपुर, माध्य +SD2 में करण्डा, शेरपुरकला, वाराचवर, कसिमाबाद, नन्दगंज में है। जबकि अन्य में विशेषीकरण अतिनिम्न अथवा माध्य के आस–पास है। विनिर्माण के अन्तर्गत माध्य +SD5 में गाजीपुर,, माध्य +SD2 में गाजीपुर, माध्य +SD3 में सादात, मुहम्मदाबाद, माध्य +SD2 में सैदपुर, दिलदार नगर,, जखनिया, बहादूरगंज, रेवतीपुर, भदौरा, जंगीपुर आदि हैं जबकि शेष अतिरिक्त केन्द्रों में अधिकाशं विनिर्माण कार्य माध्य के आस पास ही है। परिवहन सेवाओं में माध्य +SD4 के अन्तर्गत गाजीपुर, मुहम्मदाबाद, +SD3 में सैदपुर, जमानिया, माध्य +SD2 में जखनिया आदि केन्द्र विशेषीकृत है, जबकि शेष माध्य के आस–पास ही है। अन्य सेवाओं में माध्य +SD5 में जखनिया माध्य +SD4 में सैदपुर, सादात महत्वपूर्ण है शेष केन्द्रों में सेवाओं का विशेषीकरण माध्य के आस–पास ही है। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि गृह उद्योग में गाजीपुर, मुहम्मदाबाद, सादात, दिलदार नगर, सैदपुर, जमानिया विनिर्माण में गाजीपुर, परिवहन में सैदपुर, मुहम्मदाबाद तथा अन्य सेवाओं में जखनिया, सैदपुर, मुहम्मदाबाद तथा अन्य सेवाओं में जखनिया, सैदपुर, सादात महत्वपूर्ण है।

विभिन्न विशेषीकृत वर्गों के अन्तर्गत सेवा केन्द्रों के वितरण की 5 आवृत्ति लेखाचित्रों में प्रदर्शित किया गया है। इनमें क्षेतिज अक्ष पर कार्यात्मक विशेषीकृत के वर्ग और उर्ध्वाधर अक्ष पर सेवा केन्द्रों की आवृत्ति को प्रदर्शित किया गया है। सेवा केन्द्रों के विभिन्न वर्गों के वितरण को और अधिक स्पष्ट करने के लिए कार्यात्मक अध्ययनों से यह ज्ञात होता है कि अध्ययन क्षेत्र में समग्र विशिष्टीकृत एवं विभिन्न सेवा केन्द्रों के वितरण असमान है। सम्पूर्ण 50 विशिष्टीकृत सेवा केन्द्रों में से केवल 17 सेवा केन्द्र ऐसे हैं। जो दो अथवा अधिक कार्यों में विशिष्टीकृत है। गृह उद्योग में गाजीपुर मुहम्मदाबाद, सैदपुर, सादात विशिष्टीकृत है जबकि कासिमाबाद ,भावरकोल, गााजीपुर, मुहम्मदाबाद वाणिज्य में विनिर्माण में मुहम्मदाबाद, गाजीपुर, जखनिया, परिवहन में गाजीपुर, मुहम्मदाबाद, जखनिया, औड़िहार तथा अन्य सेवाओं में जिला मुख्यालय के अलावा सभी विकासखण्ड मुख्यालय उल्लेखनीय है।

ग्रामीण सेवा केन्द्रों के कार्यात्मक विशिष्टीकरण का क्षेत्रीय वितरण प्रतिरूप

गृह उद्योग के सेवा केन्द्र – अध्ययन क्षेत्र के कुल 50 सेवा केन्द्रों में मात्र 10 केन्द्र क्षेत्रीय माध्य (0.88) से ऊपर हैं जिनमें से 6 केन्द्र गाजीपुर, मुहम्मदाबाद, जमानिया, सैदपुर, सादात दिलदारनगर आदि माध्य

+SD1 के अन्तर्गत है और यहाँ गृह उद्योगों का निम्नस्तर मिलता है। जबकि माध्य +SD2 के अन्तर्गत गाजीपुर और मुहम्मदाबाद अपेक्षाकृत गृह उद्योग में विशेषीकृत है। सादात माध्य +SD3 वर्ग में है। जबकि सर्वाधिक विशेषीकरण गाजीपुर में है। जो माध्य +SD5 से ऊपर है।

इस तरह स्पष्ट होता है कि कार्यात्मक केन्द्रीयता के पदानुक्रमानुसार गाजीपुर और मुहम्मदाबाद उच्च कोटि के पदानुक्रमिक स्तर में है, जबकि शेष निम्न कोटि के पदानुक्रमिक स्तर में आते है। अध्ययन क्षेत्र मध्यवर्ती भाग में मुहम्मदाबाद, गाजीपुर में उच्चतर का विशेषीकरण सूचकांक को प्रदर्शित किया गया है। इसके साथ ही कार्यात्मक केन्द्रीयता सूचकांक में पदानुक्रमिक स्वरूप और कार्यात्मक विशेषीकरण सूचकोंक में माध्य +SD1 से +SD5 तक विशेषीकरण के स्तर को प्रदर्शित किया गया है। गृह उद्योग के सन्दर्भ में गाजीपुर प्रथम स्थान पर, इसके बाद क्रमशः मुहम्मदाबाद, सैदपुर, सादात, दिलदार नगर, जखनिया का स्थान आता है, लेकिन विशेषीकरण के स्तर के अनुसार जंगीपुर, जलालाबाद कासिमाबाद ही ऐसे केन्द्र है, जो गृह उद्योग में सर्वाधिक विशेषीकरण के स्तर रखते हैं। कार्यात्मक केन्द्रीयता सूचकांक के सन्दर्भ में ये प्रथम पदानुक्रमिक स्तर के केन्द्र है दूसरे स्थान पर अल्प विशेषीकृत केन्द्र मुहम्मदाबाद गाजीपुर, सादात, जखनिया है जिनका विशेषीकरण स्तर माध्य +SD1 के आसपास ही है। शेष केन्द्र विशेषीकृत नही है। वाणिज्य के सन्दर्भ में निचले पदानुक्रम में मुहम्मदाबाद विशेषीकृत है। इन दोनो केन्द्रों के अतिरिक्त वाराचवर, कासिमाबाद में विशेषीकरण का स्तर माध्य +SD2 के निकट है। शेष केन्द्र जैसे मुहम्मदाबाद, सादात, सैदपुर पदानुक्रमिक रूप में उच्चवर्ग में होते हुए भी विशेषीकृत नही है। इनके विशेषीकरण का स्तर माध्य +SD1 के आस पास ही है। शेष केन्द्र इससे भी नीचे है।

विनिर्माण में मुहम्मदाबाद विशेषीकरण के उच्च स्तर पर है, शेष केन्द्र माध्य के निकट है और विशेषीकृत नही है परिवहन में गाजीपुर, सैदपुर, सादात विशेषीकरण के सर्वोत्तम स्तर पर है, जबकि शेष केन्द्र माध्य के आस पास अथवा माध्य +SD1 के आस पास है और विशेषीकृत नही है। अन्य सेवाओं में मुहम्मदाबाद विशेषीकरण के सर्वोच्च स्तर पर है। जहाँ विशेषीकरण माध्य +SD5 तक है। शेष केन्द्र माध्य +SD1 के आस पास है और विशेषीकृत नही है।

विनिर्माण के सेवा केन्द्र :– अध्ययन क्षेत्र गाजीपुर जनपद के अन्तर्गत विनिर्माण कार्यों को संचालित करने वाले कुल 23 सेवा केन्द्र आते है, जिनमें क्षेत्रीय माध्य 0.44 से नीचे 13 केन्द्र आते हैं। इसतरह कुल 9 केन्द्र विशेषीकृत है। इनमें माध्य +SD1 के अन्तर्गत एक केन्द्र मुहम्मदाबाद है, जबकि माध्य +SD2 के अन्तर्गत 6 केन्द्र, सम्मिलित है माध्य +SD3 के अन्तर्गत 2 केन्द्र, माध्य +SD5 से ऊपर है। इसतरह जलालाबाद सर्वाधिक विशेषीकृत सेवा केन्द्र है, जहाँ विशेषीकरण का स्तर 1.71 है। दूसरा स्थान भावरकोल कासिमाबाद और फिर मुहम्मदाबाद, सैदपुर, जखनिया आदि अल्प विशेषीकरण के स्तर पर है। अध्ययन क्षेत्र में विनिर्माण्ध सम्बन्धी कार्यों को संचालित करने वाले केन्द्रों को देखने से स्पष्ट होता है कि इनका वितरण क्षेत्र में गाजीपुर बनारस मार्ग पर है इनमें विशेषीकरण के सर्वोच्च स्तर मान इन्ही मागों पर स्थित सेवा केन्द्रों पर मिलता है। जिनमें मशीनरी कार्य, ट्रैक्टर के वाडी का निर्माण, लौह धातुओं से विभिन्न बस्तुओं को बनाये जाने आदि है।

परिवहन के सेवा केन्द्र – अध्ययन क्षेत्र में परिवहन कार्य को करने वाले सभी 50 सेवा केन्द्र आते हैं। इसका कारण अध्ययन क्षेत्र में मुख्य सड़क मार्गों से संयुक्त करके दूसरे और तीसरे क्रम के मार्गों का निर्माण हुआ है। जिससे अधिकांश सेवा केन्द्र नोड़ल केन्द्र के रूप में विकसित हो गये है। परिणाम स्वरूप हर जगह से विभिन्न प्रकार के परिवहन साधन उपलब्ध है। विशिष्टीकरण हथकरघा उद्योगों के कारण है। क्षेत्र में मुस्लिम आबादी अधिक है। जिसका घरेलू व्यवसाय हथकरघा उद्योग में बहुत पहले से ही विकसित रहा है। इसीलिए इस क्षेत्र, में महत्वपूर्ण सेवा केन्द्रों में हथकरघा उद्योग का केन्द्रीयकरण रहा है।

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि गृह उद्योग का विशिष्टीकरण गाजीपुर और मुहम्मदाबाद में ही हुआ है, क्योंकि यहाँ हथकरघा उद्योग से क्षेत्र में तैयार बनारसी साड़ियाँ और अन्य वस्त्र निकट के स्थित सैदपुर बनारस आदि में बेचने की सुविधा उपलब्ध है और वही से बुनकरों को

आसानी से सूत भी मिल जाता है। दूसरी और यातायात साधनों की भी अधिकता है। इसलिए इन केन्द्रों में हथकरघा उद्योगों का तेजी से विकास हुआ है।

वाणिज्य केन्द्र – अध्ययन क्षेत्र में वाणिज्य के अन्तर्गत कुल 44 सेवा केन्द्र आते है। इनमें 29 सेवा केन्द्र माध्य (1.76) के आस पास है। इसके पश्चात क्रमशः 7 केन्द्र, गाजीपुर, मुहम्मदाबाद, सैदपुर, जलालाबाद, सादात, जखनिया, भदौरा, आदि माध्य +SD1 के अन्तर्गत सम्मिलित है। पाँच केन्द्र माध्य +SD2 के अन्तर्गत है। 3 केन्द्र माध्य +SD3 के अन्तर्गत सम्मिलित हैं

इस तरह स्पष्ट होता है कि भदौरा वाणिज्य में विशिष्टीकृत है। जबकि मुहम्मदाबाद, सैदपुर, जखनिया कम विशिष्टीकृत है। पदानुक्रमिक रूप में कार्यात्मक केन्द्रीयता के अनुसार मुहम्मदाबाद, सैदपुर, जखनिया प्रथम कोटि के पदानुक्रम में हैं, जबकि भदौरा निम्नकोटि के पदानुक्रम में है। फिर भी भदौरा, मरदह, जखनिया में वाणिज्यिक कार्यों का विशिष्टीकरण सर्वाधिक हुआ है। इसके बाद रेवतीपुर विरनों, भावरकोल, मिर्जापुर, ताजपुर का स्थान आता है।

इस तरह से स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र के विभिन्न पदानुक्रम के सेवा केन्द्रों के वर्गों में अपेक्षाकृत उच्च वर्ग के पदानुक्रम में केवल गाजीपुर, मुहम्मदाबाद, जमानिया गृह उद्योग में विशेषीकृत है। इनमें मुहम्मदाबाद वाणिज्य एवं परिवहन में भी विशेषीकृत हैं जबकि वाणिज्य, परिवहन एवं अन्य सेवाओं और विनिर्माण में अपेक्षाकृत छोटे–छोटे केन्द्र विशेषीकृत है। यह तथ्य स्पष्ट करता है कि विभिन्न कार्य वर्गों में छोटे केन्द्रों का विशेषीकृत होना उनकी कुल जनसंख्या के अनुपात में कार्यों में अधिक जनसंख्या का होना है, जबकि बड़े केन्द्रों में जनसंख्या के अनुपात में कम जनसंख्या विभिन्न कार्यो में लगी है।

इससे परिवहन साधनों की मरम्मत, ईधन आपूर्ति आदि से सम्बन्धित कार्यों का संचालन इन केन्द्रों से होता है। लेकिन कार्यों की आवृत्ति पदानुक्रमिक रूप में कम होती गयी है। इसलिए क्षेत्रीय औसत 89 के आसपास में कुल सेवा केन्द्रों, की संख्या 37 है। जबकि माध्य +SD1 के अन्तर्गत 7 केन्द्र, माध्य +SD2 के अन्तर्गत 2, माध्य +SD4 के अन्तर्गत 2 केन्द्र है। इस तरह मुहम्मदाबाद, और गाजीपुर सर्वाधिक विशेषीकृत है। यहाँ पर विभिन्न प्रकार की सेवाओं का अधिक केन्द्रीकरण हुआ है।

विविध कार्यों के सेवा केन्द्र – विविध कार्यों के अन्तर्गत उपरोक्त कार्य वर्गों के अतिरिक्त अन्य बहुत से कार्य विकसित है और ऐसे कार्य प्रायः सभी सेवा केन्द्रों में मिलते हैं। अध्ययन क्षेत्र में भी 50 केन्द्र इन कार्यों को संचालित करते है। इन सभी केन्द्रों में 35 केन्द्र क्षेत्रीय माध्य 1-3 के निकट है जबकि 13 विशेषीकृत है। इनमें से 10 केन्द्र माध्य +SD1 के अन्तर्गत है, 2 केन्द्र माध्य +SD2 के अन्तर्गत तथा 1 केन्द्र माध्य +SD5 से ऊपर हैं।

इस तरह विविध सेवाओं में सर्वोच्च विशेषीकरण का स्तर कासिमाबाद में मिलता है। जहाँ कम जनसंख्या होते हुए भी सेवाओं का बहुत ही उच्च स्तर है। इसके बाद जखनिया एवं जलालाबाद भी अधिक विशिष्टीकृत है। यह उल्लेखनीय है कि पदानुक्रमिक रूप में गाजीपुर, मुहम्मदाबाद, सैदपुर, सादात जैसे उच्च कोटि के केन्द्र कम विशिष्टीकृत अथवा औसत के निकट है। क्योंकि जनसंख्या की तुलना में वहाँ सेवाओं का केन्द्रीकरण कम है, इसी कारण बड़े केन्द्र निम्न विशेषीकरण की श्रेणी में है।

इससे स्पष्ट होता है कि इन सेवा केन्द्रों में वाणिज्यिक कायों की अधिकता परिवहन साधनों की गहनता तथा अन्य जिलों से सीधा सम्पर्क आदि कारणों से है।

इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र में विभिन्न ग्रामीण सेवा केन्द्रों के कार्यात्मक वर्गीकरण के विश्लेषण से स्पष्ट होता कि ग्रामीण क्षेत्रों में प्रत्येक सेवा केन्द्र प्रायः हर प्रकार के कार्यों को सम्पादित करता है। क्योंकि प्रत्येक प्रकार के कार्य हेतु अपेक्षाकृत दहलीज स्तर (Thresold Level) कम परिमाण में ही मिल जाता है। दूसरी बात यह है कि लघु स्तरीय ग्रामीण क्षेत्रों में सेवा केन्द्र प्रायः स्थानीय आवश्यकता से सम्बन्धित कार्यों को सम्पन्न करते है। कोई वृहदाकार केन्द्र भी विशेष कार्य को सम्पादित नही करता है। क्योंकि उसके लिए अपेक्षित दहलीज स्तर (Thresold Level) नहीं मिल पाता है। इसके साथ ही वृहद

केन्द्र से लेकर लघु स्तर तक के केन्द्र भी महत्व के कार्यों को सम्पादित करते है। क्योंकि क्षेत्र की सम्पूर्ण जनसंख्या को अनिवार्य रूप से सभी कार्यों की आवश्यकता होती है। इसीलिए क्षेत्र के सन्दर्भ में यह परिकल्पना पुष्ट होती है। कि ग्रामीण सेवा केन्द्रों ,में कार्यों का विभाजन स्पष्ट नही होता है। यही कारण है कि क्षेत्र में विभिन्न सेवा केन्द्रों में कार्यों का विशेषीकरण भी सीमित है।

Refrences

1. Aurousseu, M. (1921) : The Distribution of Population, A Constructive Problem, "Geographical Review Vol. II, No-4, Oct., pp. 563-592."

2. Wiemer, A.M. and Hommer Hoyt (1939) : Principles of Urban Real Estate, New York.

3. James, H.E. (1930) : Urban Geography of India, Bulletin of Geographical Society of Philadelphia 28, pp. 101-122.

4. Nath V. (1952) : Urbanization in India with special Refrence to growth of Cities World Population Confrence Rome, Memograph pp. 4.

5. Trewartha, G.T. (1952) : Chinese Cities Origine & Functions, "A.A.A.G. 42 (1), March, pp. 69-93."

6. Hall, R.B. (1934) : The Cities of Japan, Notes on Distribution and Inherited Forms, "A.A.A.G.24, pp 175-200."

7. Kneedlre, G.M. (1962) : Economic Classification of Cities, The Municipal year Book pp. 30-38.

8. Willson, M.G.A. (1962) : Some Population Characteristise of Australian Settlem-ents, Tizdschriftvoor Econo-mic Sociale Geographic Vol. 53, pp125.

9. Jones, Victor (1954) : Economic Classification of Cities and Metropolition Areas, "the Municipal year Book pp. 49-54, 69."

10. PowNall, L.L. (1953) : The Function of Newzealand Towns Manchester School. Economic Social studies, Vol.21,pp 154-64.

11. Alexander, J.W. (1944) : The Basic and Non Basic Concept of Urban Economic Functions, Eco. Geography 30, pp 246-61.

12. Dick, R.S. (1961) : Variation in the Occuptional Structure of Central Places of the Darling Downs, Quweens Land University of Quens Lan paper – 1.

13. Ullman E.L. (1960) : The Minimum Requirements Approach to the Urban Economic Base. Proceeding of the I.G.U.

14. Alexander J. WG. (1944) : op. cit.

15. Mukerjee, Mahamaya (1966) : Function and Functional Classification of Towns in Bihar, Ph.D Thesis (Un.Public) University of Patna.

16. Webb. John. W. (1959) : Basic Concept in the Analysis of Small Urban Centres of Menisota, "A.A.A.G. (49) (I) pp. 55-72."

17. Smith R.H.T. (1965) : Method and Purpose in Functional Towns Classificat-ion, "A.A.A.G. 53 (3) Sept. pp. 539-548."

18. Berry, B.J.L. (1959) : Ribbon Development in the Urban Business Pattern, A.A.A.G. Vol. 49, No. – 2, pp. 145-155.

19. Weaver, John C. (1954) : Crop Combination Regions in the Middle West, G.R. 44 (2) pp. 175-200.

20. Dai, K (1957) : Industrial Structure of Japan's prefecture, Proceeding of the I.G.U. Regional Conference in Japan, pp. 310-316.

21. Refiullah, S.M. (1965) : A New Approach to functional Classification of Tows, "the Geographer, 12. pp. 40-53."

22. Janki, V.A. (1954) : Functional Classification of Urban Settlements in Kerla, Journal of Maharaja Sayaji Rai University of Baroda, Vol. 3, Oct. pp 81-90.

23. Mukerjee, M.M. (1966) : Opcit. (Ref. 15)

24. Singh K.N. (1959) : Function and Functional Classification of Towns in U.P. the N.G.J.I of India Vol.5, P. 3 spt. 121-148.

25. Ganguli, B.N. (1965) : Classification of Indian Cities Towns Groups and Towns (With a population of 5000 and Over). Essays in Geography By Chaudhari M.R. (ed), the Geographical Society of India, Calcutta, pp. 82-92.

26. Ahmd, R.S. (1965) : op. cit.

27. Rafiullah, S.M. (1965) : op cit pp 40-45.

28. Saxena, N.P. (1966) : Functional Analysis of Settements in the Yamuna-Hindon Tract of Western U.P. and A classification, Apprasial, Geographical observer,

29. Bansal, S.C. (1975) : Town Country Relationship in Saharanpur City Region, "Saharanpur."

30. Tiwari, P.S. (1986) : Functional Patterns of Town in Madhya Pradesh, "N.G.J.I., Vol. 14 Part – I, pp. 41-54".

31. Singh, O.P. (1968) : Functions and Functional Classes of Central Places in UP "N.G.J.I. Vol. 14 pt 2-3, pp. 83-127."

32. Mitra, A. (1971) : A Functional Classification of India's Twns, " Pattern of Population Change in India by Ashish Bose (ed) Delhi, pp. 261-286."



Nav Jyoti, Vol. 6, No. 12, January-June 2018 ISSN : 2249-7331

जनजातियों में प्रचलित जेहरा/सरना पूजा या बोने थान या पचाइठ

डॉ0 प्रभात सिंह

सहायक प्रोफेसर, भूगोल विभाग, बद्री विशाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, फर्रुखाबाद

जेहरा पूजा मूलतः संथाल, कमार, गुण्डा आदि जन जातियों को त्योहार है। लेकिन अब यह सोलह आनिया गांव की पूजा हो गयी है। करमाली इसे बोनेथान के नाम से पुकारते है। तथा गांव वाले इसे **पचाइठ** कहते है। यह त्योहार अषाढ मे या कभी–कभी श्रावण माह मे मनाया जाता है। जेहरा पूजा के दिन बकरा तथा मुर्गे की बलि दी जाती है। इसके बाद ही धान रोपनें का कम शुरू होता है। इसलिये इसे **''बानलाम्भी''** पूजा भी कहा जाता है। इस पूजा को करने के पूर्व यदि कोई व्यक्ति मर जाता है तो इसे 10 दिन बाद की मनाते है। परन्तु बहुत ही जरूरी हो तो इसे तीन दिन बाद भी बनाया जाता है। इस त्योहार को मनाने के पूर्व कोई व्यक्ति धान रोप देता है तो उससे जुर्माना लिया जाता है और गांव मे होने वाले प्राकृतिक आपदाओ को कारण उसे ही माना जाता है।

सरना जन जातियों के धर्मिक विश्वासों के समुच्चय का केन्द्र है। इसका अर्थ एक पवित्र स्थल या उपवन से है। जहॉ जन जातियों के परम्परागत धार्मिक कार्यो का सम्पादन किया जाता है। छोटानागपुर की जन जातियॉ सरना मे पूजा करती है। जिसे कहीं कहीं **'जेहरा', 'जाहेर', या 'जायेर'** भी कहा जाता है। सरना स्थल पर 'सरल' के कुछ वृक्ष होते है तथा यह गांव के बाहरी किनारें पर होता है। इस पावन उपवन से जुडे धार्मिक कार्यो मे बिहार/झारखण्ड की जनजातियों के ब्रहमांण्ड विज्ञान की अवधारणा तथा ज्ञान के दिर्गविन्यास सन्निहित होते है जिसके आधार पर जनजातीय संस्कृति की अलग एक पहचान होती है। जेहरा पूजा के लिये कोई खास दिन तथा तिथि निश्चित नही होती है। लेकिन दातूँ(बोकारों) तरफ के गांव मे इस मंगलवार के दिन ही मनाया जाता है। जेठ महीना के अन्तिम समय मे 'नाया' (संथाल) तथा '' गोड़इत'' (करमाली) मिलकर विचार विमर्श करते है कि कौन सी तिथि को जेहरा पूजा मनाना चाहिये। निर्धारित मंगलवार दिन के पहले वाले शुक्रवार को गोड़इत पूरे गांव मे हांक भरता है कि ''मंगर के जेहरा पूजा हतो हो पठरू सब कोयलबा हो।'' हांक भरने का काम रात 7–8 बजे तक करता है क्योंकि इस समयगांव के लोग अपने–अपने घर मे मौजूद रहते है। किसी को यह कहने का मौका नही दिया जाता है कि अमुक समाचार से मै अवगत नही हो पाया हूँ।

नये रविवार को सुबह से ही इस पूजा के लिये सक्रिय हो जाता है। इस दिन वी नाखून कटवाता है स्थान करता है और शुद्ध होकर जेहरा बारी को साफ करते हुये सजाने लगता है। रविवार से मंगलवार तक वह यही रहता है।इस बीच किसी की मृत्यु हो जाती है तो पूजा रूकती नही है क्योंकि जेहरा पूजा का काम विधिवत् रूप से शुरू हो गया होता है। मंगलवार को गांव के लोग दो बजे दिन तक अपना–अपना बकरा लेकर पहुँचते है तथा गांव के सभी टोंलो से लोगों के पहुँचने के बाद नाया जेहरा पूजा प्रारम्भ करता है।

गांव के सामूहित ''बिहारी''(चन्दा) से सफेद रंग का बकरा तथा कई बोतल दारू खरीदे जातें है। इस बकरे को हल्का फुल्का नहलाकर नाया के द्वारा चराया जाता है और पेड के नीचे बलि दी जाती है। बकरे को चराने के दौरान यदि बकरा अरवा चावल का कुछ दाना खा लेता है तो समझ जाता है कि उनके द्वारा दी जाने वाली बलि स्वीकार की जा रही है। यदि बकरा चावल को सरलता से नही खाता है तो नाया पुनः धूप, अगरबत्ती, दिखाकर देव–भूत को सम्बोधित करते हुये कहता है कि –हर वर्ष की भॉति इस वर्ष भी तुम्हारे लिये भोग की वस्तु को हाजिर कर रहा हूँ! तुम अपना भोग ग्रहण करो और हम लोगों को खुश करों। यदि हम लोगों से कोई गलती हो गई हो तो हमे माफ कर दो और हमे इसी प्रकार की सेवा करने का मौका देते रहो। बलि पशु को तब तक नही काटा जाता है ुजब तक वह चावल का एक दो कण नही खा लेता है। बकरे की बलि दी जाने के बाद उसके सिर को नाया के

वंशज के पुरूष वहीं पर बनाने लगते है क्योंकि सबसे पहने नाया को मांस खाना पडता है। इसी मांस को खाकर नाया अपना उपवास तोडता है। इसके खाने के बाद ही गांव के अन्य सदस्य खाते है। बकरे के माथा को नाया के पुत्र मॉ भाई–भतीजा बनाने लगते है वे भी इसे खा सकते है।

सामूहिक रूप से खरीदे गये सफेद बकरे की बलि दी जाने के बाद काफी अन्य बकरों को नाया एक–एक करके चराता है और काटना प्रारम्भ करता है। बकरे कटते चले जाते है तथा बकरें का ... मालिक लेकर थोडा दूर हटता जाता है। जितने भी बकरे काटते है उन सभी बकरों के सिर नाया के हो जाते है। इस निद नाया अपने सभी सम्बन्धियों को आमंत्रित करता है क्योंकि सभी मांस को वही पर बनाकर खाना पडता है। मांस को सिर्फ पुरूष ही खा सकते है। कोई भी महिला इसे नही खा सकती है और न ही इस जगह आती है। सामूहिक रूप से खरीदे गये सफेद बकरे के सिर को सिर्फ नाया तथा उसके पुत्र एवं भतीजा ही खा सकते है लेकिन बाकी मांस को कोई भी पुरूष खा सकता है। बलि चढाये गये सभी बकरों को इसी धार्मिक स्थल पर बनाना पडता है। और इसे यही पर खाना पडता है। इसके मांस को किसी भी जाति का कोई भी पुरूष खा सकता ह।

इस दिन जेहरा बारी मे पूरे गांव का जमघट लगा रहता है। सभी पुरूष अपने–अपने बकरे को बनाने मे व्यस्त रहे है। कई समूहों के लोग भात भी यही बनाते है तथा बाकी लोगों के लिये भात घर से बनकर आता है। मांस बनाने की प्रक्रिया शुरू हो जाती है जिससे सारा वातावरण ..... नजर आने लगता है। लोग आपस मे चर्चा करते हुये नजर आते है कि कल मै अमुख जगह के खेत मे ''वान लगाऊॅगा'' तो कोई कहता है कि इस वर्ष किसी दूसरे काम मे फंस गया था जिसके कारण खेत तैयार नही कर पाया हूॅ। कुछ दिन के बाद अमुख जगह का खेत तैयार हो जायेगा। धान रोपनी के कार्य मे देरी न हो इसके लिये उसे सलाह दी जाती है कि जैसे भी हो समय पर धान रोपनी हो जानी चाहिये ताकि धान की फसल की वृद्धि मे कोई प्राकृतिक रूकावट न आ सके।

कई लोगो को अपनी–अपनी मजबूरी की चर्चा करते हुये देखा जाता है तथा उन मजबूरियों को दूर करने की सलाह भी दी जाती है। सारा माहौल सिर्फ कृषि कार्य से सम्बन्धित ही होता है क्योंकि इसकी पूजा धान रोपने की शुरूआत करने के लिये ही की जाती है।

बात चीत समाप्त हो जाने का समय आ जाता है क्योंकि इस बीच मांस बनकर तैयार हो जाता है जिसे खाने के लिये लोग उत्सुक रहते है। इस पूजा मे जितेने भी बकरो की बलि दी जाती है उन तमाम बकरों को इसी धार्मिक स्थल स्थल के बीच बनाया जाता है। तथा इसके मांस को सिर्फ मर्दो को ही खाना होता है। यदि मांस बच जाता है तो उसे यही पर मिट्टी मे गाड दिया जाता है। खाना खाने के बाद वर्तन की सफाई भी इसी जगह की जाती है तथा किसी भी प्रकार के बचे हुये भोज्य पदार्थ को वापस घर नही लाते है। बकरा काटते समय जो बकरा एक ही बार मे न कटता है तो माना जाने लगता है के नाया के संयम मे जरूर कोई गडबडी है या फिर जिस घर का बकरा है उस घर मे कोई गडबडी है। साधारणतः घर की गडबडी पर ही विशेष ध्यान केन्द्रित होने लगता है। क्योंकि नाया अन्य बकरों को काटता है जो लगातार एक बार मे कटता चला जाता है। कोई तीन चार बार मे कटता है तो उसे और अपशकुन माना जाता है। बकरे जब एक से अधिक बार मे कटते है तो इसका असर सारा गांव मे पडता है। यदि गांव मे महामारी, बीमारी, धान मे रोगा का लगना, गाय भैस का मरना आदि किसी भी तरह की गडबडी होती है , तो इसकी सारी जिम्मेवारी नाया पर थोपी जाती है। ऐसी स्थिति मे नाया अपने घर मे अरवा चावल देकर शगुन करता है और रात मे आने वाले स्वप्नों पर गौर करता है। स्वप्न या तो स्वयं नाया देखता है या फिर उसकी मॉ देखती है। स्वप्न का जिक्र गांव वालों क बीच किया जाता है और उसी के अनुसार अगला कार्यक्रम बनाया जाता है। विशेष पस्थिति मे जेहरा पूजा दोबारा मनाया जाता है। इस बार सिफ एक ही सफेद बकरा काटा जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

- Jharkhand: data highlights the scheduled tribes, census of india 2001.
- Bodding, P.O.: Satal Folk Tales. Cambridge, Mass.: H. Aschehoug; Harverd University Press,1925.
- Roy Chaudhary, Indu. Folk Tales of the santals. 1st ed. Folk tales of india series, 13. New Delhi: Sterling Publishers,1973.
- Tribal Religion: Religious beliefs and Practices among the tribes. New Delhi: Manohar, 2000.
- Jahar worshiping place of Santals: Retrived 2011-04-01.
- Hoffmann, John-Baptist: A Mundari grammar with exercises, 2 vol., Calcutta, 1905-09.
- Sahu .c., tribes of Jharkhand , K.K.Publication, Allahabad.